



गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराञ्चल) २४९४११

आत्मीय,

अमोने आशा तथा विश्वास छे के आपलां आराध्य परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीय माताशु तथा युगशक्ति गायत्री मातानी असीम कृपाथी आप अने आपना कुटुंबीजनो सौ कुशल हशो, पत्र तथा पत्रवाडिक, मासिकोना माध्यम द्वारा युगतीर्थ शान्तिकुञ्जना समाचारोथी आप सौ अवारनवार अवगत पल थता न रहो छे, साथे साथे गुरुजुनो प्रेम, वात्सल्य तथा रक्षालनी दिव्य अनुभूतिओनो पल अनुभव करता हशो. पूज्य गुरुदेवे आ युगना महाअभियान (महान युगनिर्माण आंदोलन)मां आपलां सौनी कोर्षनी कोर्ष प्रकारे निभाववामां आवती भागीदारी जुवन लक्ष्य माटे अेक श्रेष्ठ साधन भतावी छे. साथे साथे तेनी दिव्य शक्तिओने धारण करी शकवा पात्रताना विकास माटे अवार नवार मार्गदर्शन पल आप्छुं छे. अे न क्ममां तेमले नवरात्रिना दिवसोमां विशेष साधना करवा निर्देश कर्यो छे.

दर वर्षनी जेम आ वर्षे पल नवरात्रिनो आ पवित्र तहेवार ता-२१ थी २८ मार्चनी तारीओमां आवी रह्यो छे. आ दिवसोमां संकल्पभेद्य साधना करवामां आवे छे. तेनी अंतर्गत उपासनाना क्ममां गायत्री मंत्रनी दररोज २७ भाणाना नपनुं विधान छे, जे पोतानी ऋष अनुसार त्रयथी चार कलाकमां पूरा थर्ष नय छे. अगर कोर्ष नव आगंतुक आपो मंत्र भोलवा अशक्तिमान होय, तो ते 'ॐ (भूर्भुवः स्वः)' (पंचाक्षरी गायत्री मंत्र) नी साथे पल आ नपनी संप्या पूरी करी शकय. तेमां दररोज अेक कलाकनो समय लागे छे. संपूर्ण श्रद्धा साथे पूरी करवामां आवती आ साधना आत्माना उत्कर्षनी दृष्टिअे चमत्कारिक इलित थाय छे.

आशा छे के आप पल व्यक्तिगत या सामूहिक अथवा पोताना शहेरनी शाजा साथे जोडाई विधिविधान पूर्वक नवरात्रिनुं अनुष्ठान करी शको छे. गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्जमां तेना दोष परिमार्जन माटे व्यवस्था गोठववामां आवी छे, जे करोडो साधकोनुं गुरुधाम छे अने नयां आपुं वर्ष सतत दररोज योवीस लापना नप नियमित चालता रहे छे. पूर्णाहुतिना दिवसे तमाम साधकोने हवनमां भाग लेवा प्रेरित करशो. प्रत्येक आहुतिनी साथे अेवी भावना करो के देवपरिवार ना सभ्यो सामूहिक साधनात्मक परिश्रम वडे चारे भाजू व्यापेलो विषम प्रवाह विपर्यय रह्यो छे अने उज्ज्वल भविष्यनी सुप्त संभावना साकार थर्ष रही छे. नवरात्रि साधनामां भाग लेनारा परिजनोना नाम सरनामा साथे अेक यादी शान्तिकुञ्ज नर्र भोक्ली आपशो, अहींथी तेने माटे पल दोष परिमार्जननी विधिविधान सामे व्यवस्था करी शकय.

साधनानी पद्धति तो भधा न अपनावे छे, परंतु तेनी मूल धरी प्राणचेतना तप अने योगने मोटा भागना लोको भूली नय छे. आपली पासे परम पूज्य गुरुदेव द्वारा करवामां आवेलुं प्रचंड तप (योवीस लापना २४ महापुरश्चरण), परम वंदनीय माताशु द्वारा देवकन्याओ सहित करवामां आवेलुं संकल्पभेद्य अनुष्ठान तथा दररोज शान्तिकुञ्ज गायत्री तीर्थ अने तपोभूमि मथुरामां नपवामां आवी रहेला करोडो गायत्री नप अेक विशाल भंडार छे. अर्थात साधनाना समयमां तप अने योगने योग्य स्थान आपवुं नोर्षअे. तपनो अर्थ छे-पोतानी जुवन उर्षने भरण थवाथी रोकवी अने योगनो मतलब छे, जुवनना महत्त्वना उद्देश्य माटे व्रतधारी ननुं अने पोतानी प्राण चेतनानी सामूहिक शक्तिमां अेकाकार थवुं. गायत्री युगपरिवर्तनकारी महाशक्ति छे. आपली साधना नयारे पल सामूहिक साधनामां जोडाई नय, तो आपले पल अे भंडारनी नमा रकमना अेक शेरधारक ननी नर्षअे छीअे. कोर्षपल प्रकारनी मनोकामना वगर करवामां आवेली निष्काम उपासना, कोर्षपल प्रकारना द्वेष या हरिर्षाईना भावथी लोकहितार्थे करवामां आवेली गायत्री साधना अनुपम इण आपे छे. कोर्ष पल साधके आ महत्त्वनी तक गुमाववी न नोर्षअे.

तमाम साधक भाईभहेनो माटे आवी रहेली नवरात्रि साधना भौतिक-आत्मिक शक्ति-भण इपे इणदायक साभित थाय अने साधनाना माध्यमथी गुरुजुना असंन्य वरदानो निरंतर भणता रहे अने आत्मिक मार्ग पल निरंतर भुलतो रहे, अे न आराध्यशक्तिने प्रार्थना छे.

आपनो भाई

शान्तिकुञ्ज

(डॉ. प्रणवभाई पंड्या)

आपनी भहेन

शैलभाणा

(शैलभाणा पंड्या)